

मानसून में पशु स्वास्थ्य, प्रबंधन एवं उपाय

उमा कांत वर्मा¹, शिव कुमार त्यागी¹, स्वरूप देबरॉय^{2*}, दिग्विजय सिंह³, राम बचन⁴ एवं नरेंद्र कुमार⁵

¹सहायक आचार्य, पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

²सहायक आचार्य, पशु शरीर रचना विज्ञान, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

³सहायक आचार्य, पशु पोषण, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

⁴सहायक आचार्य, पशु चिकित्सा जैव रसायन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा

⁵सहायक आचार्य, पशु उत्पादन एवं प्रबंधन, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा



बरसात का मौसम पशुपालन से जुड़े लोगों के लिए सबसे कठिन चुनौतियों में से एक होता है। इस दौरान, पशुओं में बीमारियों के फैलने का खतरा काफी बढ़ जाता है। इसलिए, पशुपालकों के लिए न केवल संभावित बीमारियों के प्रति सतर्क रहना, बल्कि मानसून के मौसम की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप व्यापक पशु प्रबंधन रणनीतियाँ अपनाना भी अनिवार्य हो जाता है। इसके लिए पशु देखभाल के विभिन्न पहलुओं में व्यापक समायोजन की आवश्यकता होती है। मानसून के दौरान पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को सुनिश्चित करने के लिए, स्वच्छ, शुष्क वातावरण बनाए रखना, संतुलित और पौष्टिक आहार प्रदान करना और परजीवी संक्रमण को रोकने के लिए प्रभावी उपाय लागू करना आवश्यक है।

बरसात का मौसम जानवरों को कैसे प्रभावित करता है?

मानसून का मौसम जानवरों के लिए कई चुनौतियाँ लेकर आता है, खासकर भारी बारिश, बाढ़ और भूस्खलन की आशंका वाले क्षेत्रों में। इसका प्रभाव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से हो सकता है, जो उनके स्वास्थ्य, पोषण और प्रबंधन को प्रभावित करता है। बरसात के मौसम में प्रमुख समस्या निम्नलिखित हैं:

- अत्यधिक वर्षा और जलभराव मुख्यतः खड़ी फसलों और चारागाहों को नुकसान पहुँचाते हैं, जिससे पशुओं के लिए चारे और चारे के संसाधनों की कमी हो जाती है।
- बरसात के मौसम में उच्च आर्द्रता का स्तर पशुओं में त्वचा संक्रमण, फफूंदजनित रोग और अन्य त्वचा संबंधी समस्याओं के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करता है।
- भारी वर्षा के कारण आर्द्र क्षेत्रों में कीटों की संख्या में वृद्धि होती है, जिससे पशुओं में जलन हो सकती है, संक्रमण फैल सकता है और अंतः परजीवी संक्रमण हो सकता है।
- गीली और अस्वास्थ्यकर ज़मीन की स्थिति के कारण बरसात के मौसम में वायरल और बैक्टीरियल संक्रमण, विशेष रूप से खुरपका-मुँहपका रोग, का प्रसार बढ़ जाता है।
- बरसात के मौसम में बढ़ी हुई आर्द्रता, परजीवियों की अधिकता, खराब पोषण और दूषित चारे और पानी के संपर्क में आने के कारण पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर हो जाती है।

बरसात के मौसम में पशुओं के रख-रखाव में सावधानियां

मौसमी रूप से प्रचलित बीमारियों (जैसे, हेल्मिंथियासिस, डर्मेटोफिलोसिस और श्वसन संक्रमण) की निगरानी के अलावा, पशुपालकों को बरसात के मौसम में व्यापक जैव सुरक्षा और पर्यावरण प्रबंधन व्यवस्थाओं को लागू करना चाहिए।

- बारिश के दौरान पानी के रिसाव को रोकने के लिए पशुशाला की छतों की समय पर मरम्मत सुनिश्चित करें।
- गर्मी और उमस से बचने के लिए पशुशाला की खिड़कियाँ खुली रखें और पंखे चलाएँ।
- मच्छरों के प्रजनन और परजीवी संक्रमण से बचने के लिए पानी के जमाव को रोककर बरसात के मौसम में स्वच्छता बनाए रखें।
- पशुओं के मलमूत्र की सफाई प्रति दिन सुनिश्चित करें और जीवाणु संक्रमण को कम करने के लिए पशुशालाओं को प्रतिदिन फिनाइल इत्यादि से सफाई करें।
- पशुओं के बाड़ों में और उसके आसपास कचरा या जैविक अपशिष्ट जमा होने से बचें। इसे तुरंत हटाने की व्यवस्था करें और मक्खियों, टिक्स और अन्य रोगवाहकों को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों का नियमित छिड़काव करें।

मानसून के दौरान पशु आहार के रखरखाव की चुनौती

किसानों और पशुपालकों को अक्सर बरसात के मौसम में पशु आहार के संरक्षण और प्रबंधन में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस दौरान प्रमुख चुनौतियां निम्नवत हैं:

- पर्याप्त भंडारण सुविधाओं के अभाव के कारण मानसून के दौरान पशु आहार का सुरक्षित भंडारण मुश्किल हो जाता है।
- वर्षा का पानी पशुशाला में बने कुंडों में चला जाता है।
- वर्षा ऋतु में अत्यधिक नमी और खराब वायु-संचार के कारण फफूंद लग जाती है और संग्रहित आहार खराब हो जाता है।
- आर्द्र परिस्थितियों में कीटों के संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है, जिससे पशु आहार की गुणवत्ता और सुरक्षा प्रभावित होती है।
- अनाज में अक्सर अतिरिक्त नमी बनी रहती है, जिससे सड़न और पोषक तत्वों की कमी होती है, जिससे अंततः किसानों को आर्थिक नुकसान होता है।

मानसून के दौरान पशुओं के लिए संतुलित आहार पद्धतियाँ

कई पशुपालक बरसात के मौसम में हरे चारे की मात्रा कम कर देते हैं, लेकिन ऐसा नहीं करना चाहिए। पशुओं को लगभग 40-50% हरा चारा और 50-60% सूखा चारा युक्त संतुलित आहार मिलना चाहिए। इसके अतिरिक्त, मानसून के दौरान पशुओं के स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए खनिज मिश्रण, नमक और सरसों के तेल जैसे पूरक आहार देना आवश्यक है। रोग प्रतिरोधक क्षमता और विकास को बढ़ावा देने के लिए आहार में विटामिन और प्रोटीन युक्त घटक भी शामिल किए जाने चाहिए। यदि पशुओं की भूख कम हो जाती है या वे पानी पीने में हिचकिचाते हैं, तो उक्त समस्या समाधान के लिए तुरंत पशु चिकित्सक से परामर्श लेना ज़रूरी है।

बरसात के मौसम में पशुओं को प्रभावित करने वाले सामान्य रोग

खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी): यह एक अत्यधिक संक्रामक विषाणुजनित रोग जो मवेशी, भेड़, बकरी और सूअर जैसे दो खुर वाले पशुओं को प्रभावित करता है। हालाँकि यह पशुओं के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डालता है, लेकिन मनुष्यों के लिए कोई खतरा नहीं है।

एंथ्रेक्स: यह बैसिलस एंथ्रेसीस नामक जीवाणु से होने वाला एक गंभीर संक्रामक रोग है। यह रोगाणु वर्षों तक मिट्टी में बना रहता है और मुख्य रूप से पशुओं को प्रभावित करता है, लेकिन कभी-कभी मनुष्यों में भी फैल सकता है।

ब्लैक क्वार्टर (ब्लैकलेग): क्लोस्ट्रीडियम चाउवोई नामक जीवाणु से होने वाला एक जीवाणु संक्रमण, जो मवेशियों, भेड़ों और बकरियों को प्रभावित करता है। इसकी विशेषता कंकाल की मांसपेशियों में गंभीर सूजन, ऊतकों में गैस बनना और तेज़ बुखार है।

जूँओं का संक्रमण: मानसून के दौरान परजीवी जूँओं की आबादी बढ़ जाती है, जो जानवरों का खून पीकर प्रभावित जानवरों में जलन, कमज़ोरी और बेचैनी पैदा करती हैं।

निष्कर्ष

मानसून का मौसम विभिन्न प्रकार के रोग, पर्यावरणीय तनाव और चारा प्रबंधन संबंधी कठिनाइयों के कारण पशुधन के स्वास्थ्य और उत्पादकता के लिए गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। इन प्रभावों को कम करने के लिए, पशुपालकों को सतर्क और समग्र प्रबंधन पद्धतियाँ अपनानी चाहिए, जिनमें स्वच्छ और हवादार आश्रय स्थल बनाए रखना, संतुलित पोषण सुनिश्चित करना, समय पर टीकाकरण कराना और बीमारी के शुरुआती लक्षणों के लिए पशुओं की बारीकी से निगरानी करना शामिल है। वर्षा ऋतु की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार पशु देखभाल रणनीतियों को अपनाकर, किसान इस चुनौतीपूर्ण अवधि में पशु कल्याण की रक्षा कर सकते हैं और कृषि आजीविका को बनाए रख सकते हैं।